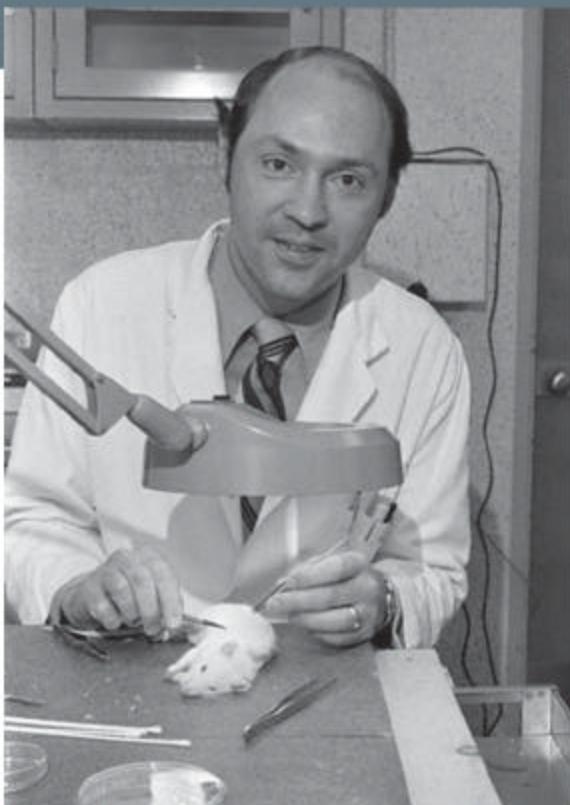


स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200



विलियम समरलिन - 'पैटिंग द माइस'

वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में धोखाघड़ी का एक मामला विलियम समरलिन का रहा है जो एक त्वचा रोग विशेषज्ञ थे। समरलिन ने अपने हैरतअंगेज दावे से लोगों का ध्यान आकर्षित किया मगर जल्दी ही पकड़े गए। समरलिन न्यूयार्क स्थित मेमोरियल र्स्लीअन केटरिंग कैंसर सेंटर में प्रतिरक्षा विज्ञानी राबर्ट गुड के साथ प्रतिरक्षा विज्ञान पर शोध कार्य कर रहे थे। उनके शोध का विषय था ऊतक प्रत्यारोपण के संदर्भ में प्रतिरक्षा तंत्र का अध्ययन। अर्थात् जब किसी जीव को दूसरे जीव का ऊतक प्रत्यारोपित किया जाता है तो उसका प्रतिरक्षा तंत्र क्या प्रतिक्रिया करता है।

समरलिन का दावा था कि किसी भी जीव में किसी अन्य जीव के ऊतक का प्रत्यारोपण सम्भव है चाहे वे उनके बीच परस्पर कोई आनुवंशिक सम्बंध न हों। समरलिन के

मुताबिक उस जीव का शरीर इस नए ऊतकों को अस्वीकार भी नहीं करेगा। शर्त यह थी कि दाता से प्राप्त ऊतकों को चार से छह हफ्ते तक एक विशेष संवर्धन माध्यम में रखना होगा। जाहिर है, इस तरह का शोध और उससे प्राप्त परिणाम अंग प्रत्यारोपण की दृष्टि से निहायत महत्वपूर्ण थे।

सन् 1974 में समरलिन ने अपने परिणामों का प्रदर्शन किया। उन्होंने एक ऐसा सफेद चूहा प्रदर्शित किया जिसकी पीठ की त्वचा का कुछ हिस्सा काला था। समरलिन के मुताबिक वह काला हिस्सा किसी असम्बंधित दाता चूहे से लेकर प्रत्यारोपित किया गया था।

गुडस की प्रयोगशाला में समरलिन के इस प्रदर्शन के दौरान एक तकनीशियन ने महसूस किया कि प्रत्यारोपित हिस्सा वास्तव में चूहे की त्वचा को परमानेट मार्कर से रंग कर बनाया गया है। इस निशान को एल्कोहल से धोकर हटाया भी जा सकता था।

समरलिन ने बाद में माना कि लगातार शोधकार्य करने से वे शारीरिक और मानसिक थकावट से भर गए थे और उन पर शोध के सकारात्मक परिणाम देने का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा था।

इस घटना का एक दिलचस्प परिणाम यह हुआ कि 'पैटिंग द माइस' (चूहे पर चित्रकारी) शोध कार्यों में धोखाघड़ी का पर्यायवाची मुहावरा बन गया। इस पूरे काण्ड पर जोसेफ हिक्सन ने तो एक किताब भी लिखी है - दी पैचवर्क माउस।